17

Lecture - 141

भारत छोड़ो आन्दोलन में बिहार की भूमिका

— Mamta Rani
Guest Assist. Professor
Deptt. of History.
SNSRKS College, Saharsa

BA part - 3rd.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

व्यवस्था, सरकारी कार्यालय, महाजन तथा साहुकार के घरों को निशाना बनाया गया और तोड़ फोड़ की कार्यवाई व्यापक पैमाने पर किया गया। सरकार ने भी इसको दबाने के लिए बल का प्रयोग किया।

बिहार मे इस आन्दोलन की दो प्रमुख विशेषता यह थी कि भूमिगत रहकर कुछ लोगो ने इस आन्दोलन मे साथ दिया और समान्तर सरकार का गठन भी कर लिया गया। इन नेताओ मे जयप्रकाश नारायण, जगत नारायण लाल, पं० सियाराम तिवारी, रामप्यारी देवी, प्रभावति देवी आदि का नाम प्रमुख है। इसी आन्दोलन मे लोकनायक के नाम से जयप्रकाश नारायण प्रसिद्ध हुए। हजारीबाग जेल से पलायन करके नेपाल के हनुमान नगर के बकरे के टापु नामक स्थान पर इन्होने आजाद दस्ता का गठन किया जिसका मुख्य कार्य तोड़ फोड़ की कार्यवाई करना था। भागलपुर के क्षेत्र मे समान्तर सरकार का गठन कर लिया गया। रेलवे को नियंत्रण मे लेकर अगस्त क्रांति (भागलपुर) रेल के नाम से संबोधित किया गया। इस आन्दोलन का सबसे दुखद पहलू 11 अगस्त 1942 मे पटना सचिवालय मे तिरंगा फहराने के क्रम मे W. जी० आर्चर के आदेश पर सात निर्दोष छात्रो की हत्या गोली मारकर हत्या कर किया गया। जिसकी स्मृति मे पटना मे शहिद स्मारक बनाया गया है।

सरकार ने दमन चक्र चलाते हुए इस आन्दोलन को कुचलने का सफल प्रयास किया। यह आन्दोलन भले ही सफल हो गया लेकिन सर्वमान्य मत है कि इसी आन्दोलन के परिणाम स्वरूप बहुत कम समय मे 1947 मे अपना देश आजाद हो गया जिससे इस आन्दोलन का महत्व उजागर होता है।

*** *** ***

6. भारत छोड़ो आन्दोलन मे बिहार का भूमिका का वर्णन कीजिए।

या,

6. भारत छोड़ो आन्दोलन मे आजाद दस्ता की भूमिका का वर्णन करे।

उत्तर-

7 अगस्त
8 अगस्त ग्वालियर टैंक मैदान
9 अगस्त 1942
प० सियाराम तिवारी
W.G. आर्चर
11 अगस्त 1942

कार्यक्रम
* संचार व्यवस्था समाप्त
* यातायात व्यवस्था ''
* कार्यालय पर आक्रमण
* महाजन साहुकारो पर आक्रमण
* हथियारो के बल पर संघर्ष
* आजाद दस्ता का गठन

जयप्रकाश नारायण
नेपाल- हनुमान नगर
बकरे की टापु

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन मे भारत छोड़ो आन्दोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह आन्दोलन अन्य सभी आन्दोलन मे सबसे व्यापक स्वरूप वाला आन्दोलन था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय क्रिप्स प्रस्ताव के असफल होने के बाद 7 अगस्त 1942 मे वर्धा मे कांग्रेस कार्यकारिणी समीति का विशेष अधिवेषण बुलाया गया और इसमे भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। 8 अगस्त 1942 को बंबई के ग्वालियर टैंक मैदान मे करो या मरो नारा के साथ इस प्रस्ताव को पारित किया और आन्दोलन शुरू हो गया जिसका प्रभाव भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे भी दिखाई पड़ता है।

इस आन्दोलन मे बिहार ने भी सार्वाधिक भूमिका निभाया। इस आन्दोलन मे बिहार के प्रमुख नेता डॉ० राजेन्द्र प्रसाद थे। जिनको गिरफ्तार करके बांकीपुर जेल मे डाल दिए गए। अखिल भारतीय स्तर पर सभी शिर्ष नेताओ को जेल मे डाल देने से यह आन्दोलन नेतृत्व विहीन हो गया परिणाम स्वरूप गाँधी जी का यह पहला आन्दोलन था जिसमे हिंसा का प्रयोग हुआ। इस आन्दोलन के कार्यक्रम के अन्तर्गत रेल, यातायात, सचार -

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz